Volume: 2 Issue: 8 Pages: 89-91

उत्तरी राजस्थान के मेघवाल समाज का परंपरागत परिधान

[1] डॉ. डोली मोगरा एवं [*2]मंजुला

[1] सहायक आचार्य, फैशन एण्ड टेक्नोलॉजी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

[*2] शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 5.231
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 25/July/2023
Accepted: 31/Aug/2023

***Corresponding Author**
मंजुला
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश

भारत विविधता वाला देश है। इसमें विभिन्न संस्कृतियां समाहित है ये भिन्नता ही इसको विश्व के अन्य देशों से अलग करती है। इस आलेख में उत्तरी राजस्थान के मेघवाल समाज के परंपरागत परिधान का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत आलेख में इस जाति के सामाजिक, आर्थिक और ऐतिहासिक जानकारियों के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया है। आलेख में इस जाति से संबंधित परिधान का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत आलेख में महिलाओं के साथ-साथ पुरुष परिधान का अध्ययन करते हुए मुख्य परिधानों का अध्ययन किया गया है। उक्त आलेख में संबंधित जाति के लोगों के परिधान को मय फोटो के मध्यम से प्रस्तुत किया गया है। यह आलेख मेघवाल समाज के परंपरागत परिधान का गहन अध्ययन करते हुए इस जाति की सांस्कृतिक जानकारियां उपलब्ध करवाता है।

मुख्य शब्द: मेघवाल, परिधान, हनुमानगढ़, राजस्थान, जाति, कुर्ता, धोती आदि।

परिचय

मेघवाल जाति मुख्य रूप से भारतीय राज्यों गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और पंजाब में बसी हुई है। इस जाति के लोग परंपरागत रूप से कपड़े की बुनाई और अन्य कपड़ा संबंधी व्यवसायों से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में ये कृषि, पशुपालन और अन्य शारीरिक श्रम से जुड़े कार्य करते हैं। इनका अधिकत्तर जन समूह मजदूरी विशेषकर कृषि मजदूरी संबंधी कार्य करते हैं। वे अपनी पारंपरिक जीवन शैली और संस्कृति के लिए भी जाने जाते हैं, जिसमें पारिवारिक मूल्यों और एक घनिष्ठ समुदायिकता पर जोर दिया जाता है। मेघवाल लोग अपनी कड़ी मेहनत और अपने शिल्प के प्रति समर्पण के लिए जाने जाते हैं और वे अपने कौशल और ज्ञान के लिए सम्मानित हैं। वे अपने आतिथ्य और उदारता के लिए भी जाने जाते हैं। मेघवाल लोग छोटे गांवों और कस्बों में रहते हैं, और वे स्थानीय समुदाय का एक हिस्सा हैं। वे अपने पारंपरिक संगीत और नृत्य के लिए भी जाने जाते हैं, जो अक्सर त्योहारों और अन्य विशेष अवसरों के दौरान किया जाता है।

मेघवाल समुदाय भारत में सबसे अधिक आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों में से एक है। राष्ट्रीय स्तर पर 2011 की जनगणना के अनुसार मेघवाल समुदाय की साक्षरता दर केवल 48.9 प्रतिशत है जो राष्ट्रीय औसत 74.04 प्रतिशत से बहुत कम है। मेघवाल समुदाय का अधिकांश हिस्सा कृषि और शारीरिक श्रम से संबंधित होने के कारण इनकी औसत आय राष्ट्रीय औसत से बहुत कम है। मेघवाल समुदाय अन्य अनुसूचित जातियों की तरह भारत में सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले समुदायों में से एक है, जिसमें बड़ी संख्या में मेघवाल परिवार गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं।

भारत में मेघवाल समाज का परंपरागत परिधान-

साधारणतः भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में मेघवाल जाति के लोग अपनी क्षेत्रीय भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार की पोशाकें धारण करते हैं लेकिन अधिकत्तर लोग परंपरागत रूप से एक धोती (कमर और पैरों के चारों ओर लिपटे कपड़े का एक लंबा टुकड़ा) और एक कुर्ता (एक लंबी कमीज) पहनते हैं। अधिकत्तर महिलाएं घाघरा (लंबी स्कर्ट) और कांचली, ब्लाउज पहनती हैं। भारत में इस समाज की महिलाएं जेवरात भी पहनती है। जिनमें वे गले के जेवरात, चूड़ियाँ और झुमके (बाला) सहित रंगीन और सजावटी गहने पहनती हैं। पुरुष लोग जेवरात बहुत कम पहनते हैं। पुरुषों द्वारा सिर के ऊपर पाग या पगड़ी पहनी जाती है, जिसे स्थानीय भाषा में साफा कहा जाता है। यह अक्सर सफेद रंग का होता है जिससे सिर पूर्णतः ढका होता है।

उत्तरी राजस्थान के मेघवाल समाज का परंपरागत परिधान-

उत्तरी राजस्थान में मुख्यतः दो जिले हनुमानगढ़ और राजस्थान आ जाते हैं। इन जिलों के परिधानों पर हरियाणा और पंजाब का असर देखा जाता है, जिससे मेघवाल समाज भी अछूता नहीं है। इस क्षेत्र के मेघवाल समाज के लोगों में वर्तमान में पहनावें के क्षेत्र में आधुनिकता का प्रभाव देखा जा सकता है, लेकिन उम्र दराज लोगों के द्वारा आज भी परंपरागत पोशाकों का प्रयोग किया जाता है।

पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले परंपरागत परिधान-

परंपरागत पोशाक में पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले परिधान में धोती-कुर्ता और चद्दर-कमीज है। इस पोशाक की ये खास बात कि इस पोशाक को मूच्छ धारित पुरुष ही पहनते है।

धोती, कुर्ता और पगड़ी-

वर्तमान में धोती कुर्ते का प्रचलन बहुत कम रह गया है। पहने जाने वाली धोती का रंग सफेद होता है जिसको सामान्यतः धुलाई के समय नील डालकर उसकी चमक को बढ़ाया जाता है। धोती बांधने के तरीके भिन्न-भिन्न होते है जैसे एक लांग की धोती या दो लाँग की होती है।

चद्दर/लूँगी-कमीज और साफा-

शरीर के निचले हिस्से पर पहनी जाने वाली चद्दर को तैमल भी कहा जाता है यह वैसे तो सामान्यतः सफेद रंग की होती है लेकिन इस जाति के कुछ लोग खाकी रंग की चद्दर का भी इस्तेमाल करते हैं। चद्दर के ऊपर पहने जाने वाले कमीज का रंग सफेद ही होता है।

इस समाज में समय के साथ परंपरागत परिधान पहनने का चलन कम हुआ है। इस समाज के लोग परंपरागत परिधानों को विशेष अवसरों पर (होली-दीपावली और शादी-विवाह के अवसर पर) ही पहनते हैं। नियमित पहनने वालों की संख्या में निरंतर कमी देखी गई है

महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले परिधान (लहंगा, कुर्ता और ओढ़ना)-

इस क्षेत्र की महिलायें आम तौर पर परंपरागत परिधानों में विश्नोई परिधान वाला लहंगा/घाघरा पहनती है। यह लहंगा लंबी स्कर्ट की तरह घेरदार होता है। रंग के अनुसार यह घाघरा किसी भी रंग का हो सकता है जो कि छापेदार होता है। इसमें सामान्यतः छोटी-छोटी बेल बूटियों की छपाई की होती है।

घाघरे के ऊपर लंबा कमीज होता है जो उम्र के अनुसार भिन्न-भिन्न रंग का होता है। उम्र दराज महिलायें सामान्यतः सफेद रंग का कमीज पहनती है। कमीज की लंबाई घुटनों या इससे भी नीचे तक की होती है।

माथे/सिर पर अक्सर ये औरते बोरला (विधवा महिलायें सामाजिक परम्परा के अनुसार बोरला नहीं बांधती है) बांधती है जिसका आकार दिनों दिन छोटा होता जा रहा है यह सामान्यतः कपड़े का जिस पर मनके धागे के माध्यम से टांके हुए होते है।

सिर पर ओढ़ने के रूप में एक रंग बिरंगी (लाल छापेदार) ओढ़ना ओढ़ा जाता है जिसकी लंबाई-चौड़ाई बराबर (125*125 सेमी) होती है। ओढ़ने के किनारे पर एक जाली नुमा पट्टी स्थाई रूप से टांकी हुई होती है जिसे स्थानीय भाषा में काँगरा कहा जाता है। ओढ़ने के नीचे बचे भाग का एक किनारा एक साइड से खींच कर कमर के अग्र भाग से लपेटते हुए दूसरी साइड ले जाया जाता है जिसे पिन आदि से स्थाई कर दिया जाता है जिसे पैटी मारना कहते हैं।

पैरों में जूतों के रूप में नवयुवतीयां सामान्यतः सैंडिल पहनती है जबकि उम्र दराज महिलायें सामानतः काले रंग की चमड़े की जूतियाँ पहनती है।

समय के साथ परंपरागत परिधान पहनने का चलन कम हुआ है। इस समाज के लोग परंपरागत परिधानों को विशेष अवसरों पर पहनते हैं, जैसे होली, दीपावली और शादी-विवाह के अवसर पर।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि मेघवाल समाज में परंपरागत परिधान को पहनने का चलन कम होता जा रहा है। जिसका कारण शायद अन्य समाज की तरह भारतीय संस्कृति में पाश्चात्य प्रभाव या आधुनिकीकरण ही हैं।

संदर्भ सूची

1. वियोगी, नवल (2019). मद्र और मेघों का प्राचीन व आधुनिक इतिहास, नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन
2. सिंह, वृंदा (2019). वस्त्र विज्ञानं और परिधान निर्माण. जयपुर: पंचशील प्रकाशन
3. नवल, चन्दनमल (2016). राजस्थान की प्रमुख अनुसूचित जातियां. नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन
4. चंद,श्यो (2015). स्पेशियो-टेम्पोरल अनालिसिस ऑफ कॉटन कल्टीवेशन श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ (अप्रकाशित शोध प्रबंध, (भूगोल विभाग). उदयपुर: मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय

5. ताराराम (2013). मेघवंश इतिहास और संस्कृति भाग-2. नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन
6. ताराराम (2011). मेघवंश इतिहास और संस्कृति भाग-1. नई दिल्ली: सम्यक प्रकाशन
7. भार्गव, डॉ बेला (1998). वस्त्र विज्ञान एवं धुलाई कला. जयपुर: युनिवसिटी बुक हॉउस
8. Grosidi ZJ. Watson's textile design and colour, Butter worth and Co. Ltd, Bombay, 1975.
9. वर्मा, डॉ प्रमिला (1973). वस्त्र विज्ञान एवं परिधान, भोपाल: हिंदी ग्रन्थ अकादमी